फोटो-फ्रेम

लेखिका - सौ. मीना गरीबे (जैन) अकोला.
हिन्दी रुपान्तरकार - जमनालाल जैन, सारनाथ (वाराणसी)

महावीर ब्रह्मचर्याश्रम गुरूकुल कारंजा में 'व्यक्तिगत विकास' पर एक शिविर का आयोजन था। मुनिश्री समन्तभद्र महाराज ने महाराष्ट्र में ग्रामीण इलाकों के असमर्थ लडकों के शिक्षण, धर्म संस्कार आदि के लिए अनेक गुरूकुलों की स्थापना की है। उनमें कारंजा (विदर्भ) का महावीर ब्रह्मचर्याश्रम महत्त्वपूर्ण है।

शिविर में अनेक युवक-युवतियाँ आनेवाली थी। चिन्मय नाम का 12 वी कक्षा का छात्र भी जाने के लिए उत्सुक था।

परन्तु माँ की ममता! नौ-दस दिन तक अपने से दूर चिन्मय को अन्यत्र भेजना माँ कल्पना को अच्छा नहीं लग रहा था। भावुक मन, मोहग्रस्त मन ऐसा ही होता है। परन्तु चिन्मय के पिता गंभीर थे।

उन्होंने चिन्मय की माँ को समझाया, 'चिन्मय को शिचिर में भेजना ही है। जानती हो, शिविर में कितनी ही नई बातें सीखने-समझने को मिलती है। लगभग सभी विषयों का शिक्षण, अप्रत्यक्ष शिक्षण दिया जाता है। जीवन में नियमितता आती है। चर्चा-गोष्टी होती है! मनोरंजन होता है! सांस्कृतिक कार्यक्रम होते है! सबसे बडी बात संकोच दूर होता है ! अनेक नये मित्र जुडते हैं! और फिर महावीर ब्रह्मचर्याश्रम की पवित्र और त्यागमय भूमि में रहने को मिलना तो भाग्य की बात है। इस भूमिका सान्निध्य ही, वहाँ का वातावरण ही मनुष्य को अन्तर्बाह्य शुचिर्भूत करता है।जानती हो, जैन संस्कृति पर भी विद्वानों के भाषण सुनने को मिलेंगे, तुम चाहती हो न कि चिन्मय को अपने जैन धर्म के तत्त्वज्ञान का भी ज्ञान हो! फिर उसको भेजने में हर्ज ही क्या है ?'

'उसे जाने देने में कोई हर्ज नहीं है, पर अब बारहवी कक्षा की परीक्षा का परिणाम प्रकट होने वाला है, और तब तो वह आगे की पढाई के लिए कहीं दूर लम्बे समय के लिए जायेगा ही।' बोलते बोलते कल्पनाताई का गला भर आया और आँखें नम हो गयी।
'देखो, अब तुम अपने मन को पक्का करो।' पिताजी ने ढाढस और साहस दिलाया।

कल्पनाताई सब समझ रही थी, पर माँ का मन मान ही नहीं रहा था। चिन्मय ठहरा इकलौता बेटा। हाथों का पालना और आँखों का दीपक करके बेटे का लालन-पालन किया था। कभी दो-चार दिनों के लिए भी उसे अपनी आँखों से ओझल नहीं किया था। इसी कारण आठ-दस दिनों के लिए शिविर में भेजने का मन नहीं हो रहा था। पर पिता ने एक नहीं सुनी और चिन्मय को जाना ही था। उसके अनेक मित्र आदि शिविर में भाग लेने आनेवाले थे। आखिर वह चला गया।

नौ-दस दिन का शिविर सम्पन्न होने पर उत्साह और आनंद के साथ तथा अनेक नई बातें समेट कर, गाँठ बांधकर वह लौट आया। उसके ये नौ-दस दिन लोगों से मिलते-जुलते, हँसी-विनोद करते, मित्रों और मैत्रिणीयों से हँसते-खेलते कैसे बीत गये, पता ही नहीं चला!

अब बारहवी के परीक्षा-फल की प्रतिक्षा थी। परिणाम प्रकट होने के दिन नजदीक आ रहे थे और घर के सभी लोगों की उत्सुकता बढ रही थी। पर कल्पनाताई का हृदय मानो उब-डुब, उपर-नीचे हो रहा था। आजकल बारहवी का परिणाम मानो जीवन-मरण का प्रश्न ही हो गया है। चिन्मय ने खूब मन लगाकर अभ्यास किया था।ट्युशन, पस्तकें, गाईड बुक्स आदि किसी के लिए माँ-बाप ने रोका नहीं था। यों तो चिन्मय भी होशियार छात्र था। पहले वर्ष से ही वह प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होता रहा।

परीक्षा-फल प्रकट होने के दो दिन पूर्व ही 'लोकसत्ता' समाचार-पत्र से फोन आया कि चिन्मय 18 वे नंबर पर पूरी परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ है। समाचार सुनते ही सारे घर में उत्साह-आनन्द की लहर व्याप गयी। मानो सारा घर चैतन्य के प्रवाह में नहा गया! माँ की आज्ञानुसार चिन्मय ने जिन प्रतिमा के आगे पेडा रखा, नमन किया और पिताजी के चरण स्पर्श किये।

पिताजी ने बेटे की पीठ थपथपाई और 'शाबास बेटे!' कहा।

उधर माँ कल्पनाताई ने भी अपने आगे प्रणाम करने झुके चिन्मय को खडा किया और उसका मुँह पेडे से मीठा करके भरपूर आशीर्वाद दिया। माँ की आँखों में आनन्दाश्रु छलक पडे! एक युग (बारह वर्ष) की तपस्या का फल सामने था। चिन्मय के गले में यशश्री की माला चमक रही थी।

बधाई देनेवालों का तांता लग गया। रिश्तेदार, अडौसी-पडौसी, शिक्षक, मित्र, मैत्रिणी सभी प्रसन्न थे और चिन्मय का मुँह मीठा कर रहे थे।

चिन्मय की माँ यो तो आने जाने वाले सबका स्वागत कर रही थी, पर भीतर ही भीतर एक प्रकार का आक्रन्दन भी चल रहा था कि अब यह लाडला उच्च शिक्षण के लिए लंबे समय के लिए आँखों के सामने नहीं रहेगा।सभी हितचिंतक आगे के शिक्षण की योजना बना रहे थे, पर चिन्मय का मन ही मन निश्चय था कि इंजीनियर बनना है। उच्च अंकों से उत्तीर्ण होने के कारण उसका यह निश्चय या सपना सार्थक होनेवाला ही था।

फार्म आदि भर देने की प्रक्रिया पूरी होने पर आई. आई. टी. कॉलेज में उसको प्रवेश मिल गया। इससे सभी जन मानों कृतकृत्य थे। चिन्मय के पैर तो जमीन पर टिक ही नहीं रहे थे। आँखों में सपना तैर रहा था। सुनहरा भविष्य अब एक प्रकार से निश्चित था।

चिन्मय के जाने का दिन निकट आ रहा था । उसके लिए नया सूटकेस, नये कपडे खरिदे गये । माँ ने जाने के पूर्व कुछ नाश्ते आदि की चीजें रख दी। सामग्री तैयार करते करते भी माँ सोच रही थी कि चिन्मय को कौन-कौनसी चीजें अच्छी लगती है ! होस्टेल में इसका कौन खयाल रखेगा, आदि सब सोच रही थी । मोह बडा विचित्र होता है । अपनों के प्रति दुश्चिंताएँ ज्यादा सताती है ।

चिन्मय अब कल ही जानेवाला है । पहली बार वह कानपुर जैसे अपरिचित शहर में जा रहा है, अतः उसके साथ पिताजी भी जानेवाले थे । दोनों की सूटकेस तैयार करते करते कल्पनाताई की आँखें गीली हो रही थी । चिन्मय अपना सूटकेस बन्द कर ही रहा था कि माँ एक फोटो फ्रेम ले आयी और उसे चिन्मय के हाथ पर रखते हुए कहा कि, 'यह फोटो फ्रेम सूटकेस की थली में रख लें ! रोज नमस्कार करना, स्नान करके !'

'माँ यह फोटो फ्रेम क्यो दे रही हो ? ' कुछ अनमने भाव से चिन्मय ने कहा । 'मै तो वैसे भी रोज महावीर को नमस्कार करता हूँ, और करता रहूँगा ।'

'अरे, रख ले, रखा रहेगा । इससे रोज नमस्कार करने का स्मरण भी रहेगा । दर्शन भी होगा ।'

'माँ तुम्हारा मन भी कुछ न कुछ ऐसा ही करता है । कोई भी तो अपने साथ भगवान का फोटो लानेवाला नहीं है ।'

माँ के इस आग्रह के कारण चिन्मय विचार करने लगा कि वहाँ होस्टेल में विभिन्न प्रांतों से आये युवकों के सामने फोटो को नमस्कार करना, दर्शन करना देखकर सब उसकी हँसी उडायेंगे ! इस कल्पना से ही वह काँप उठा । सबके पास तो सुन्दर सुन्दर करिश्मा कपूर, उर्मिला मातोंडकर, आदि के फोटो रहेंगे और मेरे पास यह भ. महावीर का !

'अरे, किसी भी संकट या विपत्ती के समय श्रद्धापूर्वक नमन करेगा नं ! तब तेरा संकट टल जायेगा !' माँ का आग्रह जारी था । चिन्मय को माँ के इस आग्रह पर रोष तो बहुत आया । क्या करें ! निरन्तर देव-देव बोल रही है । पीछे ही पड गयी है कि फोटो ले जा ! मैं वहाँ पढाई के लिए जा रहा हूँ या देवपूजा करने के लिए ? वह मन ही मन चिढ रहा था ।

'माँ, मैं कह रहा हूँ न कि मैं फोटो नहीं ले जाऊँगा ।' चिन्मय बिगड कर बोल पडा ।

'अरे, मेरी याद में तो ले जा !' कल्पनाताई रूंधे गले से इतना ही बोल पायी और फोटो-फ्रेम चिन्मय के सूटकेस पर रखकर आँखें पोंछते हुए भीतर चली गयी ।

इधर पिताजी माँ और बेटे की सारी नोंक-झोंक सुन रहे थे । चिन्मय को नाराज देखकर बोले, 'अरे, रख क्यों नहीं लेता अपने साथ । दीवाल पर लगाना हो तो लगाना, नहीं तो सूटकेस में ही रखे रहना । तू दूर जा रहा है, इस कल्पना से ही तेरी माँ का दिल बैठ रहा है । अब उसका मन दुःखी मत कर । रख ले फोटो !'

पिता के आदेश के आगे चिन्मय क्या बोलता ! बेमन उसने फोटो सूटकेस में रख ली । कानपूर के लिये निकलते समय माँ के आगे झुका, तब आशीर्वाद देते हुए शद्ध ही मौन हो गये । उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुए इतना ही बोल पायी, 'सदाचार कभी मत छोडना, मोह के जाल में कभी मन उलझना और बचपन से तुझ पर धर्माचरण के जो संस्कार पड़े है उन्हें कभी मत भूलना और संयम तथा सावधानी से रहना ।'

घर का सारा वातावरण भावूक हो उठा । चिन्मय के पैर घर से बाहर निकलने में मानो भारी हो गये थे ।

कॉलेज और होस्टेल के प्रवेश के बाद सब कुछ ठीक ठाक होने पर चिन्मय के पिता लौट गये । चिन्मय भी नये माहौल में घुलमिल गया । यों वह शुरू से ही खुले दिल का मिलनसार था । अन्य प्रादेशीक भाषाओं के मित्र भी बन गये । होस्टेल के कमरे के एक पार्टनर अमृत को भी उसने मित्र बना लिया । कॉलेज, प्रैक्टीकल क्लासों और नये मित्रों के साथ थोड़ा बहुत घूमना-फिरना आदि में तीन-चार महीने निकल गये ।

पहले टर्म की परीक्षा अभी अभी सम्पन्न हुई थी । दूसरे दिन से कॉलेज में दीवाली की छुट्टीयाँ लग रही थी । सभी छात्र एक माह के लिए अपने अपने गाँवों में जानेवाले थे, इसलिए सब खूश थे । चिन्मय भी घर जाने के लिए आतुर था । शाम के सात बजे ट्रेन थी, सबेरे दस बजे उसके पार्टनर अमृत की ट्रेन थी ।

जाने के दिन सबेरे उठने पर उसे लगा कि होस्टेल का वातावरण कुछ विचित्र सा है । धीमीधीमी दबी दबी आवाज में विद्यार्थियों के ग्रुपों में कानाफूसी हो रही थी । प्रत्येक छात्र दूसरे से कुछ कह रहा था । क्या हुआ है, इसकी कोई कल्पना चिन्मय को नहीं थी । अमृत अपना सामान पैक कर रहा था । हाथ में ब्रश लेकर चिन्मय बाथरुम में जाने लगा, तभी पाँच दस लडकों का दल होस्टेल के रेक्टर के कमरे की ओर जाते हुए दिखाई दिया । क्या हुआ होगा, इसका अन्दाज लगाते हुए वह बाथरुम में गया । चिन्मय हाथ-मुँह धोकर बाहर निकला, तब वे लड़के रेक्टर, चौकीदार सब उसके कमरे के सामने खडे दिखाई दिये । चिन्मय आश्चर्य चकित कमरे के पास आया ।

'सर इसी कमरे में जाते हुए मैंने एक छाया देखी थी, रात के साढे बारह बजे होंगे।' चौकीदार ने कहा ।

सर ने चिन्मय के कमरे का दरवाजा दो-तीन बार खटखटाया तब जाकर अमृत ने धीरे से दरवाजा खोला और सभी लडके, सर, चौकीदार कमरे में घुस गये ।

'कल रात को तुम दोनों कहाँ थे?' रेक्टर ने डाँटते हुए चिन्मय और अमृत से पूछा ।

'सर मैं तो रात में अपने कमरे में ही था ।' चिन्मय ने कहा।

'सर मैं भी तो था ।' अमृत ने गडबडाते हुए कहा ।

'होस्टेल के कई लडकों का कल रात में काफी सामान गायब हो गया है । रात में 12, 12:30 बजे के लगभग तुम्हारे कमरे में जाते हुए किसी की छाया देखी है । तुम्हारा भी सामान गया है क्या ?'

रेक्टर ने पूछा ।

'नहीं तो सर।' चिन्मय घबराते हुए बोला ।

होस्टेल में चोरी हुई है, इस कल्पना मात्र से चिन्मय अवाक् स्तब्ध रह गया । पसीने पसीने हो गया ।

'चलो, सबके सामान की जाँच कर ली जाय । तुम्हारे कमरे से ही शुरू करते है ।' रेक्टर ने कहा ।

अमृत तत्काल अपना सामान दिखाने लगा । उसके सामान में कुछ भी नहीं मिला । फिर रेक्टर चिन्मय के सामान की जाँच करने लगे । चिन्मय का सुटकेस खोला । आज ही गाँव जाना है, इसलिए उसने अपने सारे कपडे सूटकेस में व्यवस्थित ढंग से सजा दिये थे । सूटकेस खोलते ही सारे कपडे बिखर गये । उसे तो आश्चर्य ही हो रहा था । तभी रेक्टर ने एकदम सारे कपडे बाहर निकाल दिये । सूटकेस में सबसे नीचे एक छोटी सी प्लास्टिक की थैली दिखाई दी । चिन्मय को याद ही नहीं आ रहा था कि क्या है, इसमें क्या है।

रेक्टर ने थैली खोल दी । उसमें से सारा सामान जमीन पर गिरा दिया । सबकी आँखें विस्मित थीं । उस थैली में से गॉगल्स, पेन्स, पैसे के पर्स, वॉकमन्स, मोबाईल, इत्र की शीशियाँ, कीचेन्स, आदि चीजें नीचे गिरीं । और लडकों मे हो-हल्ला मच गया ।

'सर, मेरा पेन, मेरा चष्मा और सभी की संदेहास्पद नजरें एकाएक चिन्मय की ओर घूम गयीं ।

'सर, यह मैने नहीं किया, मैने चोरी नहीं की है, सर !' चिन्मय की तो डर के मारे बोलती ही बंद हो गयी । यह सारा सामान मेरे सूटकेस में कहाँसे कैसे आया है, उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था । सारी पृथ्वी उसके चारों ओर घूम गयी थी । यदि धरती फटकर उसे अपने में समाले तो अच्छा रहेगा, ऐसा उसे लग रहा था। गला भर आया । आँखों से आँसू बह रहे थे । अचानक, अनपेक्षित आये इस संकट से कैसे पार हुआ जाय, यह उसकी समझ में नहीं आ रहा था । वह बार बार यही कह रहा था कि मैंने कुछ नहीं किया, मैंने चोरी नहीं की है । मैं नहीं जानता कि यह सामान मेरे सूटकेस में कब किसने रखा ।

रेक्टर सूटकेस से शेष सारा सामान निकालने लगे । पूरा सामान निकालने के बाद सबसे नीचे महावीर स्वामी की एक फोटो दिखाई दी ।

रेक्टर ने फोटो हाथ में ली और विशेष दृष्टी से फोटो निरखने लगा । और फिर रोते हुए, घबराये हाथ जोडकर खडे चिन्मय के निष्पाप, सरल चेहरे को देखा और तत्काल अपनी पैनी नजर अमृत के चेहरे पर गडा दी ।

रेक्टर की आँखों से आँखें चार होते ही अमृत एकदम हडबडा गया और आँखें बचाकर इधर-उधर देखने लगा । अमृत रेक्टर की पकड में आ गया था ।

रेक्टर ने डाँटकर पूछा, 'तूने ही रखा है यह सारा सामान चिन्मय के सूटकेस में?'

पहले तो नहीं-नहीं करता रहा, पर कूछ धमकाने पर स्वीकार कर लिया कि वहीं रात में सब लडकों के कमरों में गया और चूराकर लाया ।

सब लडके अपनी अपनी चीजें उठाकर अपने अपने कमरों की ओर चले गये । अमृत का कैरियर बरबाद न हो, इसलिए आगे से ऐसा काम नहीं करने का अभिवचन लेकर रेक्टर ने उसे इस बार क्षमा कर दिया । बाद में रेक्टर ने कमरे से बाहर निकलने पर चिन्मय ने झुककर उसका चरण स्पर्श किया ।

'सर, आज मैं आपके कारण ही बच पाया, अन्यथा चोरी न करने पर भी चोर होने का कलंक मुझ पर लग ही जाता । मेरा भविष्य ही नष्ट हो जाता।' चिन्मय की रूलाई रुक ही नहीं रही थी। एक ओर बच जाने का, लांछन न लगने का संतोष और दूसरी ओर अनहोनी का सदमा । रेक्टर के प्रति वह हृदय से कृतज्ञ था ।

'तेरे सूटकेस में महावीर का फोटो देखा और महावीर द्वारा उपदिष्ट सदाचार के संस्कारों में तेरा पालन-पोषण हुआ होगा, यह मेरे ध्यान में, तेरे बर्ताव से आ गया । तब मैने समझ लिया कि यह ऐसा जघन्य काम तू कर ही नहीं सकता ।' और रेक्टर चिन्मय की पीठ थपथपाकर कर बाहर निकल गये ।

चिन्मय ने आँसूओं से भरी आँखों से महावीर स्वामी की फोटो का वन्दन किया और उस फोटो में ही माँ का चेहरा झलकने लगा। कितनी महत्त्व है माँ के ममता मय आशीर्वाद की ।

सौ. मीना गरीबे (जैन)
2, शिवनेरी सहनिवास,
विजय सोसायटी,
गोरक्षण रोड, अकोला (महा.)

(मराठी से अनूदित)

अनुवादक :-
जमनलाल जैन
अभय कुटीर,
सारनाथ (वाराणसी) 221007
फोन (0542) 595621